الموضوع : عشر حكم من رمضان

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/حفظه الله

لغة الترجمة : الـــــــــــهـــــــــــنـــــــــــديـــــــــــة

المترجم : فيض الرحمن التيمي

قناة الخطب الهندية: https://t.me/khutbat_hindi

शीर्षक: रमज़ान की दस ह़िकमतें

प्रथम उपदेश

إن الحمد لله نحمده ، ونستعينه، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا ومن سيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وأشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له، وأشهد أن محمدا عبده ورسوله.

प्रशंसाओं के पश्चात!

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वोत्तम मार्ग मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है।दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कारित बिदअ़त(नवाचार)है और प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

१-ए मुसलमानो!में आपको और स्वयं को अल्लाह के तक़्वा व उससे डरने का प्रामर्श करता हूं,यही वह प्रामर्श है जो पूर्व और पश्चात के समस्त लोगों को कया गया है,अल्लाह का कथन है:

﴿وَلَقَدۡ وَصَّيۡنَا ٱلَّذِينَ أُوتُواْ ٱلۡكِتَٰبَ مِن قَبۡلِكُمۡ وَإِيَّاكُمۡ أَنِ ٱتَّقُواْ ٱللَّهَۚ﴾ [سورة النساء:١٣١]

अर्थात: निसंदेह हमने उन लोगों को जो तुमसे पश्चात पुस्तक दिऐ गए थे और तुमको भी यही आदेश किया है कि अल्लाह से डरते रहो।

- इसलिऐ अल्लाह तआ़ला से डरें और उसका भय रखें,उसकी आज्ञाकारी करें और उसके अवज्ञा से बचें,जान लें कि अल्लाह तआ़ला का अपनें बंदों पर यह कृपा ही है कि उनके लिऐ अच्छाई एवं कलयाण के अवसर प्रदान किये,जिनमें पुण्य कार्य पर कई गुना पुण्य मिलता है,बूरे कार्य पर क्षमा प्रदान किया जाता है,और स्वर्ग में मोंमिनों (विश्वासियों) के स्थान उच्च किये जाते हैं।

- ऐे अल्लाह के बंदो(दासों)! अल्लाह तआ़ला ने अपनी ह़िकमत(नीति) से बंदों के लिए रमज़ान को मशरू (अनिवार्य) किया है,जिसमें फजर के समय से लेकर सूर्य अस्त होने तक मनुष्य भोजन-जल और संभोग से रुका रहता है।

१-अल्लाह तआ़ला ने बड़े दूरदृष्टिता से रोज़े को फरज़ किया है(यह अध्याय "अलइस्लाम,सवाल व जवाब" वेबसाइट(http://islamqa.info/ar/٢٦٨٦٢) और शैख मोह़म्मद बिन सालेह बिन ओसैमीन रहिमहुल्लाह की पुस्तक‘‘मजालिसो शहरे रमज़ान‘‘के बाबुल मज्लिस अलतासे से संक्षेप एवं हेरफेर के साथ लिया गया है।)उनमें सबसे बड़ी हिकमत(नीति) तक़वा (धर्मनिष्ठा) की प्राप्ति है:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ كُتِبَ عَلَيۡكُمُ ٱلصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى ٱلَّذِينَ مِن قَبۡلِكُمۡ لَعَلَّكُمۡ تَتَّقُونَ ١٨٣﴾ [سورة البقرة:١٨٣]

अर्थात:ऐे ईमान वालो!तुम पर रोज़े रखना फरज़(अनिवार्य)किया गया है,जिस प्रकार तुमसे पूर्व के लोगों पर फरज़(अनिवार्य) किये गऐ थें,ताकि तुम तक़वा(ईश्वर भक्ति) अपनाओ।

आयत से ज्ञात हुआ कि रोज़े के अनिवार्य होने की हिकमत(नीति)यह है कि तक़वा(धर्मनिष्ठा) अपनाया जाऐ,तक़वा(पुण्यशीलता) यह है कि बंदा अपने और अल्लाह की यातना के मध्य बचाव की दीवार बनाए,वह इस प्रकार कि अल्लाह के आदेशों को पूरा करे और अल्लाह ने जिन चीजों से रोका है उससे रुक जाए।

२-रोजा़ की एक हिकमत(नीति) यह है कि वह नेमतों (आशार्वदों)के आभारी होने का माध्यम है,क्योंकि रोजा़ नाम है खाने,पीने और संभोग से अपने आपको बचाने का,जो कि बहुत बड़ी नेमत(इश्वरकृपा) है,किंतू रोज़े की स्थिति में इनसे रुके रहने से मनुष्य को उनकी महत्ता का एहसास होता है,जब मनुष्य इन नेमतों(प्रदानों) से वंचित होता है तो उनका महत्व समझ में आता है,इस प्रकार रोज़े की स्थिति में इनसे दूर रहना उन नेमतों(आशीर्वादों)पर अल्लाह का आभार व्यक्त करने पर उकसाता है।

३-रोज़े की एक हिकमत(नीति)यह है कि वह अल्लाह की ह़राम(निषिद्ध) की हुई चीजों को छोड़ने का माध्यम है,क्योंकि रोजा़ व्यक्तिगत इच्छाओं को मात देने और एकता की कठोरता और अहंकार से नफस(आत्मा) को दूर रखने का कारण है, जिससे मनुष्य के अंदर सत्य को स्वीकारने और लोगों

के साथ विनीत भाव से सुंदर व्यवहार करने का गुण जन्म लेता है,जब्कि हमेशा पेट भरा रखने और महिलाऔं से संभोग करने से अहंकार और नेमत(प्रदान) की नाशुकरी का तत्व जन्म लेता है।

٤-रोज़ा की एक हिकमत(नीति) यह भी है कि वह काम-वासना पर प्रभुत्व प्राप्त करने में सहायता करता है,क्योंकि नफस(आत्मा)जब पेट भरे स्थिति में हो तो उसमें काम-वासना उत्पन्न होता है,और जब वह भूका हो तो काम-वासना से दूर रहता है,इसी लिऐ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"ऐ युवाओं का समूह! तुम में से जो भी विवाह की शक्ति रखता हो तो उसे निकाह करलेना चाहिऐ और जो निकाह की शक्ति न रखता हो वह रोज़े रखले क्योंकि इनसे नफसानी(आंतरिक) इच्छाऐं टूट जाती हैं"(इसे बोखारी٪٥٠٦٥ ने इब्नेमसऊद रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।)

٥-रोज़े की एक हिकमत(नीति)यह भी है कि वह मिसकीनों/गरीबों के लिऐ अनूराग एवं कृपा का स्त्रोत है,क्योंकि रोजा़ रखने वाला जब कुछ समय के लिऐ भूख का कष्ट महसूस करता है तो उसके अंदर उन फकीरों और गरीबों की याद ताजा हो जाती है जो हर समय भूखे प्यासे होते हैं,जिसके फलस्वरूप उसके अंदर फकीर व गरीब के प्रति कृपा व नर्मी पैदा होती है,उसके साथ सुंदर व्यवहार करने और उनको दान करने का भाव जन्म लेता है,इस प्रकार रोजा़ गरीबों के लिऐ अनूराग व कृपा और समाज में आपसी प्रेम को बढ़ावा देने का माध्यम बन जाता है।

٦-रोज़े की एक हिकमत (नीति) यह है कि उससे शैतान पराजित व निर्बल होता है,मनुष्य के प्रति उसका वसवसा निर्बल होजाता है,इस प्रकार मनुष्य बुरे कार्यों को करना कम करदेता है,क्योंकि शैतान मनु के संतानों की रगों में रक्त के जैसा दौड़ता है,जैसा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसकी सूचना दी है(इसे बोखारी٪٢٠٣٩ और मुस्लिम٪٢١٧٥ ने सफिया रजीअल्लाहु अंहा से वर्णित किया है।)रोज़े से शैतान का मार्ग तंग होजाता है जिससे वह निर्बल हो जाता है और उसका प्रभुत्व कम हो जाता है,अतः हृदय में अच्छाई व पुण्य के कार्य करने और पापों से दूर रहने का तत्व उमंडने लगता है।

٧-रोज़े की एक हिकमत (नीति) यह है कि रोजा़दार व्यक्ति अपने नफस को हर घड़ी अल्लाह तआ़ला को याद रखने का आदी बनाता है,इस प्रकार से वह क्षमता होने के होते हूऐ भी आत्मा के इच्छाओं को छोड़ देता है,केवल इस ज्ञान के आधार पर कि अल्लाह तआ़ला उसे देख रहा है।

८–रोज़े की एकहिकमत (नीति) यह है कि वह मोमिन(विश्वासी) को अधिक से अधिक आज्ञा के कार्यों की आदत डाल देता है,इसलिऐ कि अधिकतर रोज़े की स्थिति में मनुष्य अधिक से अधिक आज्ञा के कार्य करता है,जैसे अल्लाह का ज़िक्र और कुरान की तेलावत,इसके फलस्वरूप वह अन्य दिनों में भी इन इबादतों(प्रार्थनाओं)को करने का आदी हो जाता है।

९-रोज़े की एक हिकमत(नीति) यह भी है कि इसके माध्यम से दुनिया और उसकी इच्छाओं से रूची समाप्त हो जाती है और अल्लाह तआ़ला के पास जो पुण्य का परिणाम है उसके प्रति रूची उत्पन्न होता है।

१०-रोज़ा की एक नीति यह भी है कि इसके माध्यम से समस्त संसार में अल्लाह की पूजा का प्रदर्शन होता है,आप देखते हैं कि समस्त संसार के समस्त मुसलमान इस महीने में सामूहिक रूप से रोज़े रखते हैं,यहां तक कि वे लोग भी रोज़े रखते है जो समान्य दिनों में इस्लाम विरोधी कार्य करते हैं,जब रमज़ान आता है तो वे भी अपने मुसलमान भाइयों के साथ रोज़े रखते कोई उनमें बेरोज़ा नहीं रहता,यहां तक कि बेराजा़ पापी-अल्लाह की पनाह- भी खुलेआम खाने पीने की हिम्मत नहीं करता,बल्कि काफिर भी मुसलमानों के सामने खाने पीने से बचता है,निसंदेह यह एक महत्वपुर्ण प्रार्थना बल्कि इस्लाम के एक स्तंभ का व्यावहारिक प्रदर्शन है।

११-रोज़ा की एक हिकमत(नीति) यह भी है कि इसके माध्यम से मानवीय शरीर को अनेक चिकित्सा लाभ प्राप्त होते हैं,रोजा़ ह्रदय के धड़कन को सही करता है,पाचन तंत्र को राहत का अव्सर देता है, रक्त को हानीकारक चरबी,कोलसर्टोल और खट्टे डकार से साफ करता है,पेट को आराम पहुंचाता है,मनुष्य को मोटापे से बचाता है,शरीर में जो जहरीली सामग्री जमा हो जाते हैं,उनको बाहर करने में सहायता करता है,रक्तचाप और शुगर (sugar) का संतुलन बनाऐ रखता है।

- यह वे दस हिकमतें(नीतियां) हैं जो रोज़े के फरज़(अनीवार्य) होने में छूपी हूई हैं,यह इस्लाम धर्म के लिऐ कोई आश्चर्य का विषय नहीं,क्योंकि अल्लाह तआ़ला के अच्छे नामों में एक नाम"الحكيم" भी है,उस पवित्र अल्लाह के समस्त आदेश अत्यंत हिकमत(नीति),संपुर्णता और महारत पर आधारित होते हैं,हम कभी कभी उन हिकमतों(नीतियों) से अवगत भी होते हैं और कभी कभी हमें इनका ज्ञान नहीं होता,अथवा हम कुछ

हिकमतों(नीतियों) को जान रहे होते हैं और अनेक नीतियॉ हमसे छुपी रह जाती हैं।

- अल्लाह तआ़ला से प्रार्थना है कि हमें रमज़ान के रोज़े उसी प्रकार रखने की तौफीक दे जिस प्रकार उसे पसंद है,अपने ज़िक्र और आभार और सुंदर प्रार्थना पर हमारी सहायता फरमाए।
- अल्लाह तआ़ला हमें और आप को कुरान की बरकतों से लाभ पहुंचाए हमें और आपको उसकी आयतों और हि़कमतों पर आधारित प्रामर्शों से लाभ पहुंचाए में अपनी यह बात कहते हूए अल्लाह तआ़ला से अपने लिऐ और आप सबके लिए प्रत्येक पापों से क्षमा प्राप्त करता हूं,आप भी उससे तौबा करें,निसंदेह वह अति तौबा स्वीकारने वाला और अति क्षमा प्रदान करने वाला है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وكفى، وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:

आप जान लें-अल्लाह आप पर कृपा करे-कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह तरीक़ा था कि जब नया चांद देखते तो फरमातेः

"اللهم أهِلَّه علينا باليُمن والإيمان والسلامة والإسلام، ربي وربك الله"

(इसे अह़मद (١ / ١٦٢) ने तलह़ा बिन ओबैदुल्लाह रजीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है,और अलमुसनद के शोधकर्ताओं ने हदीस संख्या٪١٣٩٧ के अंतर्गत इसे शवाहिद के आलोक में ह़सन कहा है।)

(अर्थातःहे अल्लाह!तू उसे हम पर शांति,ईमान,सलामती और इस्लाम के साथ निकाल, (ऐ चॉद!)मेरा और तेरा रब अल्लाह है।)

आप जब भी नया चांद देखते तो यह दुआ(प्रार्थना) पढ़ते,चाहे रमज़ान का चांद हो अथवा किसी और महीने का,हमें भी आप का अनुगमन करनी चाहिऐ,विशेष रूप से इस लिए कि इस प्रार्थना में अच्छे कार्यों पर अल्लाह की सहायता मांगी गई है।

- हे अल्लाह के बंदो!जब अल्लाह तआ़ला दासों पर यह इनाम करता है कि उसे यह महीना मिल जाए तो उसे यह जानना चाहिए कि यूंही बेकार अल्लाह ने उसे नहीं प्रदान किया है,बल्कि

आज़माने के लिए प्रदान किया है ताकि जान सके कि वह रमज़ान के तक़ाजों को पूरा करता है अथवा नही,जैसे रोज़े रखना,रात को क़याम करना और अपने नफस को सत्य मार्ग पर स्थिर रखना।

- अतःप्रार्थना में खूब परिश्रम व लगन से काम लीजिए,नेकियों में अपनी गतिविधि देखाइए,और लुटेरों से सतर्क रहए जो इच्छा का अनुगमन करते हैं,जो रमज़ान में भी लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं,इस प्रकार कि गफलत में डालने वाले कार्यक्रमों का प्रसारण करते और नैतिक विरौधि सिरियल चलाते हैं।
- सलफे सालेहीन(धार्मिक पूर्वजों)का यह अंदाज़ था कि वे रमज़ान में पठन-पाठन को भी छोड़ दिया करते थे ताकि रोज़ा व क़ेयाम,ज़िक्र व अज़कार और कुरान की तेलावत के लिऐ स्वयं को खाली रख सकें,भला उस व्यक्ति का अ़मल कैसे सही हो सकता है जो इन चारों मौलिक कार्यों से बचते हुऐ खेल-कूद में व्यस्त हो जाऐ?!
- आप यह भी जानलें-अल्लाह आप पर अपनी कृपा नाज़िल करे- कि अल्लाह तआ़ला ने आपको ऐक बड़ी चीज का आदेश दिया है,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ ٱللَّهَ وَمَلَٰٓئِكَتَهُۥ يُصَلُّونَ عَلَى ٱلنَّبِيِّۚ يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ صَلُّواْ عَلَيۡهِ وَسَلِّمُواْ تَسۡلِيمًا ۝٥٦﴾ [سورة الأحزاب:٥٦]

अर्थातःअल्लाह तआ़ला और उसके देवदूत उस नबी पर रह़मत भेजते हैं,ए ईमान वालो!तुम भी उन पर दरूद भेजो और अधिक सलाम भी भेजते रहा करो।

हे अल्लाह! तू अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्माद पर रह़मत एवं शांति भेज,तू उनके उत्तराधिकारियों,अनुयाईयों और क़ेयामत तक नेकनीयती के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

हे अल्लाह! इसलाम और मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहूदेववाद एवं बहूदेववादियों को अपमानित कर,तू अपने और इस्लाम

धर्म के शत्रुओं को नष्ट करदे,और अपने एकेश्वरवादी बंदों की सहायता फरमा।

हे अल्लाह तू हमें हमारे देशों में शांति प्रदान कर,हमारे इमामों और हमारे हाकिमों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक और हिदायत पर चलने वाला बना। हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक लागू करने और अपने धर्म के उत्थान की तौफीक़ प्रदान कर, उन्हें उनके प्रजाओं के लिऐ रहमत बना दे।

- हे अल्लाह हमें रमजान नसीब फरमा और उसमें रोज़े रखने और रात को क़याम करने में हमारी सहायता फरमा,हे हमारे पालनहार!हमें दुनिया में नेकी दे और आखिरत में भलाई प्रदान फरमा और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान फरमा।

سبحان ربنا رب العزة عما يصفون، وسلام على المرسلين، والحمد لله رب العالمين.

اللهم صل وسلم على نبينا محمد وآله وصحبه.